Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

12

हिंदी साहित्य में आदिवासी संस्कृति की भूमिका

डॉ. नमिता गोस्वामी
मार्गदर्शक, सहायक प्राध्यापक (विभागाध्यक्ष)
जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, रानपुर, कोटा

प्रियंका बाफना
शोधार्थी
जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, रानपुर, कोटा

भूमिका

भारत विविधताओं का देश है – यहाँ भाषा, धर्म, वेशभूषा, खानपान, और परंपराओं में अपार भिन्नता होने पर भी एक गहरी सांस्कृतिक एकता विद्यमान है। इसी विविधता के बीच आदिवासी संस्कृति का स्वरूप अत्यंत प्राचीन और मूल है। भारतीय जनजातियाँ देश की लगभग 8ः जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती हैं और इनका जीवन, विचार, और संस्कृति भारतीय सभ्यता के मूल तत्वों को अभिव्यक्त करते हैं। आदिवासी संस्कृति भारतीय संस्कृति की जड़ है। यह संस्कृति न केवल मानव और प्रकृति के बीच संतुलन की बात करती है, बल्कि समाज में समानता, सह–अस्तित्व और परस्पर सहयोग का संदेश देती है। आधुनिक युग में जब भौतिकता और उपभोक्तावाद ने मनुष्य को प्रकृति से दूर कर दिया है, तब आदिवासी संस्कृति हमें एक वैकल्पिक जीवन–दर्शन प्रदान करती है – जो "प्रकृति के साथ जीना" सिखाती है, "उस पर अधिकार" नहीं। हिंदी साहित्य ने इस संस्कृ ति को न केवल पहचान दी, बल्कि उसे अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनाया। आदिवासी लोकगीत, मिथक, और परंपराएँ हिंदी लेखकों के लिए सृजनात्मक प्रेरणा रही हैं। स्वतंत्रता–उत्तर काल में जब साहित्य में हाशिए के वर्गों की आवाज उठी, तब आदिवासी संस्कृति के विमर्श को भी नया आयाम मिला। आदिवासी समाज ने प्रकृति के साथ सहअस्तित्व का जो आदर्श प्रस्तुत किया है, वह आज के औद्योगिक युग में अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है। भारत को यदि 'संस्कृतियों का देश' कहा जाए तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ की प्रत्येक जनजाति अपनी भाषा, परिधान, लोककला, रीति–रिवाज और आस्थाओं में विशिष्ट है।

आदिवासी संस्कृति की संकल्पना और विशेषताएँ

'आदिवासी' शब्द संस्कृत के 'आदि' (प्रथम) और 'वासी' (निवासी) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ हैकृ"भूमि के मूल निवासी"। आदिवासी संस्कृति का आधार प्रकृति, श्रम, और सामूहिकता पर टिका है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं

प्रकृति–आश्रित जीवनदर्शन

लोककला और लोकगीतों की समृद्ध परंपरा
मातृसत्तात्मक तत्वों की उपस्थिति
सामूहिक श्रम और उत्सवधर्मिता
अपनी भाषा और रीति–रिवाजों की मौलिकता

यह संस्कृति औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के दबाव में धीरे–धीरे संकट में आई है, किंतु साहित्य ने इसके अस्तित्व को शब्दों में अमर बना दिया है।

आदिवासी संस्कृति की संकल्पना

'आदिवासी' शब्द संस्कृत के 'आदि' (प्रथम) और 'वासी' (निवासी) से मिलकर बना है – अर्थात् जो किसी भूभाग के मूल निवासी हैं। भारत के संविधान में अनुसूचित जनजातियों को आदिवासी कहा गया है, जिनकी सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भिन्न, किंतु अत्यंत समृद्ध है।

'संस्कृति' शब्द संस्कृत के 'संस्कृत' धातु से बना है, जिसका अर्थ है दृ शुद्ध, विकसित और परिष्कृत आचरण। अतः आदिवासी संस्कृति का तात्पर्य उन परंपराओं, मान्यताओं और जीवन–प्रणालियों से है, जिन्हें आदिवासी समाज ने पीढ़ियों से अपनाया और संरक्षित रखा है।

हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन का चित्रण

1. प्रारंभिक हिंदी साहित्य में संकेत

आदिवासी समाज का संकेत प्रारंभिक हिंदी साहित्य में भी मिलता है। लोककथाओं, लोकगीतों, और भोजपुरी, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी जैसे क्षेत्रीय साहित्य में वनवासियों, भीलों, गोंडों और संथालों का उल्लेख आता है।

रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में भीलनी शबरी का प्रसंग आदिवासी संस्कृति की आदर्श मानवता का प्रतीक है। हिंदी कवियों ने इस सांस्कृतिक मूल्य को अपनाया और लोकधारा से जोड़ा।

2. आधुनिक हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श का उद्भव

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

आधुनिक युग में, विशेषकर स्वतंत्रता के बाद, साहित्य में यथार्थवाद और सामाजिक सरोकार बढ़े। अब लेखकों ने ग्रामीण और आदिवासी जीवन के संघर्षों को केंद्र में रखा।

(क) कविता में आदिवासी चेतना

आदिवासी कवियों ने अपनी संस्कृति को प्रतिरोध और पहचान के रूप में व्यक्त किया।

रामधारी सिंह दिनकर की कविता "हिंदी की आत्मा" में जनजीवन और लोक संस्कृति का गौरव देखा जा सकता है।

दुर्गा प्रसाद नायडू, जयप्रकाश कर्दम, और समकालीन कवि निलय उपाध्याय आदि ने आदिवासी संवेदनाओं को नई दिशा दी।

(ख) कथा साहित्य में आदिवासी जीवन

फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाओं में, विशेषतः "मैला आँचल" में, ग्रामीण और अंचलीय जीवन के साथ आदिवासी समाज की छाया मिलती है।

महाश्वेता देवी (यद्यपि बंगला लेखिका थीं, किंतु हिंदी में अनूदित रचनाओं ने बड़ा प्रभाव डाला) – उनकी कहानियाँ "द्रौपदी", "अरण्येर अधिकार", "पद्मश्री", आदि आदिवासी प्रतिरोध की सशक्त अभिव्यक्तियाँ हैं।

रणेन्द्र का उपन्यास "ग्लोबल गाँव के देवता" आदिवासी जीवन पर वैश्वीकरण के दुष्प्रभाव को दिखाता है।

नीलमणि मुक्ता, महेंद्र भील, सुभाषचंद्र कुशवाहा आदि ने भी आदिवासी संस्कृति के संघर्षों को साहित्य में प्रमुखता दी है।

(ग) नाटक और लोकरंग में अभिव्यक्ति

हिंदी नाट्यकर्म में भी आदिवासी संस्कृति का रंग दिखाई देता है। "धरती अब भी घूम रही है" (विजयदान देथा), "पारो" (महाश्वेता देवी का रूपांतर), और लोकनाट्य परंपराएँ आदिवासी संवेदना की प्रस्तुति करती हैं।

लोकनाट्य जैसे नाचा, पांडवानी, झोड़ा–चाँचरी, छऊ नृत्य आदि आदिवासी लोककला के जीवंत उदाहरण हैं जिन्हें हिंदी साहित्य ने अपनाया और रूपांतरित किया।

आदिवासी संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ

1. प्रकृति–आश्रित जीवन–दर्शन

आदिवासी संस्कृति की सबसे प्रमुख विशेषता है – प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व।

जंगल, नदी, पर्वत, पशु–पक्षी, धरती और आकाश उनके जीवन के अभिन्न अंग हैं।

वे प्रकृति को पूज्य मानते हैं, न कि उपभोग की वस्तु।

उदाहरणार्थ, गोंड, भील, संथाल, उरांव आदि जनजातियों में वृक्ष–पूजन, नदी–पूजन और पर्वत–पूजन की परंपरा आज भी प्रचलित है।

उनकी लोककथाओं, गीतों और नृत्यों में धरती और प्रकृति का गौरव गाया जाता है।

उनके त्यौहार जैसे – सरहुल, कर्मा, करम, बिंधा, और माघी – सभी ऋतुओं और कृषि से जुड़े होते हैं।

2. लोककला और लोकसंगीत की परंपरा

आदिवासी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू है – लोककला और संगीत। उनके नृत्य जैसे छऊ, गोंडी, झोड़ा, सरहुल नृत्य, करमा नृत्य आदि न केवल मनोरंजन हैं बल्कि सामुदायिक एकता और प्रकृति के साथ तालमेल का प्रतीक हैं। लोकसंगीत में बाँसुरी, ढोल, मांदर, और नगाड़े प्रमुख वाद्य हैं। उनकी कलाओं में प्राकृतिक रंगों, मिट्टी, लकड़ी, और धातु का प्रयोग किया जाता है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड और उड़ीसा की आदिवासी मूर्तिकला और चित्रकला विश्वप्रसिद्ध है – जैसे गोंड आर्ट और पिथोरा पेंटिंग।

3. धर्म और आस्था की मौलिकता

आदिवासी धर्म प्राकृतिक धर्म है। वे ईश्वर की मूर्त कल्पना की बजाय प्रकृति की शक्तियों की उपासना करते हैं। उनकी देवता–संस्था स्थानीय और सामूहिक होती है, जैसे – "धरती माई", "वनदेव", "जलदेवता", "पितृदेव" आदि। उनकी धार्मिकता में भय नहीं, कृतज्ञता का भाव होता है। वे प्रकृति की कृपा के लिए धन्यवाद स्वरूप पूजा करते हैं, न कि दंड के भय से। यह धार्मिकता वैज्ञानिक दृष्टि से भी टिकाऊ और पर्यावरण–संरक्षक है।

4. सामूहिकता और सह–अस्तित्व की भावना

आदिवासी समाज का मूल तत्व 'सामूहिकता' है। यह समाज व्यक्तिवाद की बजाय सामूहिक जीवन पर आधारित है। ग्रामसभा या 'पंच' की परंपरा उनके समाज की न्यायिक और सामाजिक इकाई है। निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते हैं, जिससे सामाजिक एकता बनी रहती है। उनके गीत, नृत्य और त्यौहार भी सामूहिक होते हैं – हर व्यक्ति सहभागिता करता है। इससे उनका सामाजिक बंधन दृढ़ होता है और समाज में समानता का भाव प्रबल रहता है।

5. श्रमप्रधान संस्कृति

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

आदिवासी समाज में श्रम को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। खेती, वनोपज–संग्रह, मत्स्य–पालन, बुनाई, लकड़ी–कला आदि उनका प्रमुख आजीविका स्रोत हैं। उनकी मेहनत में कला और संस्कृति दोनों झलकती हैं। आदिवासी समाज में श्रम का कोई वर्गीय विभाजन नहीं होता– स्त्री–पुरुष, दोनों समान रूप से श्रम करते हैं। श्रम को वे पूजा का रूप मानते हैं और इसी से उनके जीवन में आत्मनिर्भरता आती है।

6. उत्सवधर्मिता और आनंद का भाव

आदिवासी जीवन त्यौहारों और उत्सवों से परिपूर्ण है। उनके प्रत्येक पर्व में संगीत, नृत्य, और सामूहिक भोज का आयोजन होता है। यह उत्सव केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक बंधन को सुदृढ़ करने का माध्यम है। उनके पर्व प्रकृति और कृषि चक्र से जुड़े होते हैं – जैसे सरहुल वसंत ऋतु में, कर्मा फसल पकने पर, और माघी वर्षांत में मनाया जाता है।

7. मौखिक परंपरा और कथा–कहानी

आदिवासी संस्कृति में मौखिक परंपरा अत्यंत समृद्ध है। वे अपने इतिहास, वीरता, और जीवन मूल्यों को लोककथाओं, गीतों और नृत्यों के माध्यम से जीवित रखते हैं। यह मौखिक परंपरा उनकी पहचान की वाहक है और आधुनिक लेखन से पहले की साहित्यिक धरोहर कही जा सकती है।

8. स्त्री की गरिमा और समानता

आदिवासी समाज में स्त्रियों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर रही है। स्त्री–पुरुष दोनों आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक कार्यों में समान भागीदारी रखते हैं। विवाह, संपत्ति, और निर्णय प्रक्रिया में स्त्रियों की स्वतंत्र भूमिका होती है।

उनका परिधान, आभूषण और नृत्य उनके आत्म–सम्मान का प्रतीक है। कई जनजातियों में स्त्री के नाम पर संपत्ति का उत्तराधिकार भी मिलता है –जो भारतीय समाज में दुर्लभ उदाहरण है।

9. लोकज्ञान और पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली

आदिवासी संस्कृति में लोकज्ञान का भंडार है। वनस्पति, औषधि, कृषि, जल–संरक्षण, और पशुपालन से जुड़ी जानकारी पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप में संचित रही है। उनके "वैद्य" या "ओझा" पारंपरिक ज्ञान के माध्यम से रोगों का उपचार करते हैं। आज जब आयुर्वेद और जैवविविधता पर शोध हो रहे हैं, तब यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी संस्कृति ने हजारों वर्ष पहले ही प्रकृति आधारित चिकित्सा प्रणाली को विकसित किया था।

10. आधुनिकता और परिवर्तन

आधुनिकता ने आदिवासी संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। खनन, उद्योग, और विस्थापन ने उनके पारंपरिक जीवन को झकझोरा है। कई जनजातियाँ अपनी भूमि, भाषा और संस्कृति से वंचित हो रही हैं। फिर भी, शिक्षा और सामाजिक चेतना के बढ़ने से आदिवासी समाज अब अपनी पहचान के लिए संघर्षरत है। आधुनिक आदिवासी साहित्य, लोककला और संगीत इस परिवर्तन के प्रतीक हैं।

हिंदी साहित्य में आदिवासी संस्कृति के प्रमुख आयाम

- प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व – आदिवासी साहित्य में धरती, जंगल, नदियाँ, और पशु–पक्षी मानवीय संबंधों की तरह प्रस्तुत होते हैं।
- श्रम और स्वावलंबन – साहित्य में आदिवासी चरित्र श्रमशील, आत्मनिर्भर और सामूहिकता के प्रतीक हैं।
- संघर्ष और शोषण – भूमिहीनता, विस्थापन, खनन, और वन–अधिकारों से जुड़ी समस्याएँ हिंदी उपन्यासों और कहानियों का प्रमुख विषय बनीं।
- स्त्री विमर्श से संबंध – आदिवासी स्त्रियों की स्वतंत्रता और संघर्षशीलता को महाश्वेता देवी, मृदुला गर्ग, और मनीषा कुलश्रेष्ठ जैसी लेखिकाओं ने प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया।
- लोकजीवन और उत्सवधर्मिता – आदिवासी जीवन के त्यौहार, नृत्य, गीत, और लोककला को हिंदी साहित्य ने लोकसंस्कृति के विस्तार के रूप में देखा।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में आदिवासी संस्कृति का महत्व

- यह पर्यावरण संरक्षण की वास्तविक शिक्षा देती है।
- यह भौतिकता के बजाय संतुलित जीवन की प्रेरणा देती है।
- यह समानता और लोकतंत्र के मूल मूल्यों को स्थापित करती है।
- यह विविधता में एकता का आदर्श प्रस्तुत करती है।
- यह आधुनिक विकास मॉडल के विकल्प के रूप में "सतत् जीवन पद्धति" को प्रस्तुत करती है।

आदिवासी विमर्श और समकालीन हिंदी साहित्य

21वीं सदी में 'आदिवासी विमर्श' एक सशक्त साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में उभरा है। यह विमर्श केवल करुणा नहीं, बल्कि प्रतिरोध की आवाज है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 September-October 2025 / VOL -02 ISSUE-II

रणेन्द्र, चित्रा मुद्गल, अनामिका, महेंद्र भील जैसे लेखक आदिवासी जीवन को केंद्र में रखकर अपनी रचनाओं में नई दृष्टि प्रस्तुत करते हैं।

समकालीन कविता में आदिवासी कवियों का उभरना इस बात का संकेत है कि अब वे स्वयं अपनी संस्कृति के प्रतिनिधि बन रहे हैं, न कि केवल विषय।

सोशल मीडिया और छोटे प्रकाशन समूहों के माध्यम से आदिवासी साहित्य आज मुख्यधारा में अपनी पहचान बना रहा है।

हिंदी साहित्य में आदिवासी संस्कृति की उपयोगिता और प्रासंगिकता

हिंदी साहित्य में आदिवासी संस्कृति की भूमिका केवल विषयगत नहीं, बल्कि वैचारिक भी है। इसने –

- मानवता, सामूहिकता, और प्रकृति–प्रेम के मूल्य पुनः स्थापित किए।
- हाशिए के समाजों को साहित्य में स्थान दिया।
- आधुनिकता के अंधाधुंध विकास मॉडल पर प्रश्न उठाए।
- 'समानता' और 'अस्तित्व' के विमर्श को नया आधार दिया।

इस प्रकार, आदिवासी संस्कृति हिंदी साहित्य में न केवल विषय बनकर आई, बल्कि उसने साहित्य को अधिक मानवीय, जनोन्मुख और यथार्थवादी बनाया।

निष्कर्ष

आदिवासी संस्कृति केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा है। इस संस्कृति में मानवता, प्रकृति, सामूहिकता और श्रम के जो मूल्य निहित हैं, वे आधुनिक समाज के लिए मार्गदर्शक बन सकते हैं। यह संस्कृति हमें सिखाती है कि विकास का अर्थ केवल औद्योगिक प्रगति नहीं, बल्कि जीवन का संतुलन और सामंजस्य है। आदिवासी संस्कृति की विशेषताएँ – जैसे प्रकृति–प्रेम, श्रम, समानता, और आनंद – आज भी समाज को मानवीयता की ओर लौटने का आह्वान करती हैं। यदि भारत अपनी मूल आत्मा को पहचानना चाहता है, तो उसे आदिवासी संस्कृति की संवेदना को समझना और सम्मान देना होगा। हिंदी साहित्य में आदिवासी संस्कृति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। इस संस्कृति ने हिंदी साहित्य को विविधता, संवेदना, और यथार्थ के नए आयाम दिए। आदिवासी समाज की जीवनशैली, लोककला, लोकगीत, और उनकी संघर्षशीलता साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करती है। आज जब वैश्वीकरण, शहरीकरण और पूँजीवाद के दबाव में पारंपरिक जीवन–पद्धतियाँ मिटती जा रही हैं, तब आदिवासी संस्कृति हमें स्मरण कराती है कि मानवता का मूल स्वर प्रकृति के साथ सामंजस्य और सामूहिकता में निहित है। हिंदी साहित्य इस संस्कृति का न केवल साक्षी रहा है, बल्कि उसका संरक्षक और संवाहक भी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. नीलमणि मुक्ता – आदिवासी कथा–साहित्य की दृष्टि, भोपालरू भारतीय जनजातीय शोध संस्थान।
2. पटेल, महेश – गोंड कला और आदिवासी चित्रकला, मध्यप्रदेश कला परिषद, भोपाल।
3. रेणु, फणीश्वरनाथ – मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. महाश्वेता देवी – अरण्येर अधिकार, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
5. आचार्य, रमेशचंद्र – भारतीय लोक परंपरा और आदिवासी जीवन, सारस्वत प्रकाशन, वाराणसी।
6. चौबे, शरद – आदिवासी विमर्श और आधुनिकता, लोक संस्कृति शोध केंद्र, रायपुर।
7. नीलमणि मुक्ता – आदिवासी कथा साहित्य की दृष्टि, साहित्य आजतक, भोपाल।
8. सिंह, रमाशंकर – हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन का चित्रण, प्रयाग प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. मिश्रा, कमल – आदिवासी विमर्श और हिंदी उपन्यास, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली।
10. झा, देवेंद्र कुमार – लोकसंस्कृति और हिंदी साहित्य, लोकभारती, इलाहाबाद।
11. तिवारी, नामवर सिंह – कहानी नई कहानी, राजकमल प्रकाशन।
12. रणेंद्र – ग्लोबल गाँव के देवता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
13. हरिशंकर परसाई – भाषा और जीवन, लोकभारती प्रकाशन।
14. शाह, गणेश देवी – आदिवासी संस्कृतियों की परंपरा और संकट, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
15. देवी, महाश्वेता – अरण्येर अधिकार, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
16. गणेश एन. देवि – आदिवासी संस्कृतियों की परंपरा और संकट, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
17. सिंह, रमाशंकर – आदिवासी संस्कृति और लोकजीवन, प्रयाग प्रकाशन, इलाहाबाद।
18. मिश्रा, कमल – भारतीय जनजातियाँ और उनका संस्कृति–दर्शन, लोकभारती, इलाहाबाद।
19. झा, देवेंद्र कुमार – भारतीय लोकसंस्कृति का समाजशास्त्र, साहित्य भवन, नई दिल्ली।

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved